1 भाषा तथा व्याकरण

पाठ-योजना

पाठ का उद्देश्य

- भाषा व उसके रूपों का परिचय।
- भाषा के शुद्ध रूप को समझाना।
- भाषायी कौशलों का विकास।
- व्याकरण के महत्व को समझाना।

सहायक सामग्री

- स्मार्ट बोर्ड, मोबाइल फ़ोन, पाठ्यपुस्तक, पाठ्यपुस्तक में दिया QR Code, शैक्षिक सामग्री।

पूर्व-ज्ञान

- हम किस-किस भाषा में सहज बातचीत कर सकते हैं?
- भाषा के मौखिक रूप—मोबाइल फ़ोन पर हुई बातचीत पर प्रश्न।
- इशारों को भाषा का रूप माना गया है या नहीं?
- व्याकरण हमें भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान किस प्रकार कराता है?

प्रमुख बिंदु

- प्रश्न पूछकर पाठ की रूपरेखा तैयार करना।
- QR Code स्कैन कर वीडियो दिखाना।
- पाठ में दिए चित्रों का अवलोकन करवाएँ।
- छात्रों से भावानुसार संवाद बुलवाएँ।
- बताना—
  - विचारों के आदान-प्रदान का मुख्य साधन भाषा है।
  - भाषा के दो रूप मान्य हैं— मौखिक तथा लिखित।
  - भाषा के 'सांकेतिक रूप' का प्रयोग हम व्यवहार में करते हैं, पर व्याकरणिक रूप में वह स्वीकार्य नहीं।
  - भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान करवाने वाला शास्त्र 'व्याकरण' कहलाता है।
  - व्याकरण के मुख्य रूप से तीन अंग हैं— वर्ण-विचार, शब्द-विचार तथा वाक्य-विचार।
  - उच्चरित ध्वनियों के लिए बनाए गए लिखित चिह्न 'लिपि चिह्न' या 'वर्ण' कहलाते हैं।
- 'हमने सीखा' के माध्यम से मूल बिंदुओं की पुनरावृत्ति।